International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सीकर शहर के नगरीय विस्तार का बहुआयामी मूल्यांकन: नगरीकरण, आकारिकी और जीवन की गुणवत्ता के परस्पर प्रभाव का प्रयोगसिद्ध विश्लेषण

Renu Bagriya[1], Vipin Saini[2]

[1]Research Scholar, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner (Rajasthan)
[2]Professor, Government Dungar College, Bikaner (Rajasthan)

शोध सार

भारतीय शहरों, खासकर राजस्थान के सीकर जैसे छोटे शहरों में नगरीय फैलाव पर, तेज़ विकास और उससे जुड़ी चुनौतियों के बावजूद, कम शोध हुआ है। ज़्यादातर मौजूदा अध्ययन बड़े शहरों पर केंद्रित हैं, जिससे छोटे शहरी इलाकों में नगरीकरण के कारकों और प्रभावों को समझने में कमियाँ रहीं हैं। इस शोध का उद्देश्य यह जाँचना है कि आर्थिक और सामाजिक कारक सीकर में नगरीय विकास को कैसे प्रभावित करते हैं, नगरीय फैलाव के साथ शहर की भौतिक संरचना कैसे बदलती है, और ये बदलाव निवासियों के जीवन की गुणवत्ता को कैसे प्रभावित करते हैं। इसका लक्ष्य एक बहुआयामी विश्लेषण प्रदान करना है जो बेहतर नगरीय नियोजन को सूचित करे और गैर-महानगरीय भारतीय शहरों में नगरीकरण के बारे में व्यापक ज्ञान में योगदान दे। यह शोध सीकर शहर के विभिन्न वार्डों में यादृच्छिक रूप से चुने गए 250 घरों का सर्वेक्षण करके मात्रात्मक और सामाजिक, दोनों तरह के विश्लेषण का उपयोग करता है। नगरीकरण और शहरी जीवन की गुणवत्ता को समझने के लिए संरचित प्रश्नावलियों के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए और SPSS के साथ टी-टेस्ट और काई-स्क्वायर टेस्ट जैसे सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके उनका विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि सीकर शहर में नगरीकरण पर सामाजिक कारकों की तुलना में आर्थिक कारकों का प्रभाव काफी अधिक है, जहाँ निवासी नौकरियों, उद्योग और बुनियादी ढाँचे को प्राथमिकता देते हैं। नगरीय आकारिकी—विशेषकर भौतिक संरचना—भी नगरीय विकास को गहराई से प्रभावित करती है। इससे पता चलता है कि भूमि उपयोग, कार्य और जनसंख्या पैटर्न में परिवर्तन विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि सीकर शहर में नगरीकरण मुख्यतः आर्थिक कारकों से प्रेरित है और नगरीय स्वरूप में परिवर्तन से आकार लेता है, जहाँ निवासी आमतौर पर बुनियादी ढाँचे और सेवाओं से संतुष्ट हैं। यह अध्ययन तेज़ी से बढ़ते छोटे शहरों में नियोजन और नीति निर्माण के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने हेतु निष्कर्ष-आधारित सुझाव प्रदान करता है।

Keywords: नगरीकरण, नगरीय आकारिकी, जीवन की गुणवत्ता, आर्थिक कारक, भौतिक संरचना, नगरीय नियोजन।

शोध परिचय व उद्देश्य

भारत के कई शहरों में नगरीय फैलाव एक बढ़ती हुई चिंता का विषय है। जैसे-जैसे शहर अपनी पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़ते हैं, उन्हें अक्सर बुनियादी ढाँचे, पर्यावरण और जीवन की गुणवत्ता से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना

पड़ता है (Mishra et al., 2025; Singh & Barodawala, 2025)। राजस्थान के सीकर शहर में हाल के दशकों में तेज़ी से नगरीय विकास हुआ है। यह विकास विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कारकों से प्रेरित है (Sangwan et al., 2024)। हालाँकि, इस नगरीकरण की प्रकृति और स्वरूप का बहुत ही कम अध्ययन किया गया है। भविष्य के विकास को स्थायी रूप से प्रबंधित करने के लिए इन स्वरूपों को समझना आवश्यक है।

भारत में नगरीकरण पर अधिकांश मौजूदा शोध बड़े महानगरों पर केंद्रित हैं। सीकर जैसे छोटे शहरों पर अध्ययन सीमित हैं। नगरीय विकास को शहर की संरचना में बदलाव और नागरिकों की भलाई से जोड़ने वाले विस्तृत विश्लेषण का अभाव है। इसके अलावा, बहुत कम अध्ययन इस बात की जाँच करते हैं कि क्या आर्थिक या सामाजिक कारक ऐसे शहरों में नगरीकरण की गति और दिशा पर अधिक प्रभाव डालते हैं (Chakraborty & Dey, 2024; Das et al., 2024)। ये शोध अंतराल सीकर शहर में नगरीय फैलाव व विकास के बहुआयामी मूल्यांकन की आवश्यकता को उजागर करते हैं।

इस शोध का उद्देश्य सीकर में नगरीय फैलाव के तीन प्रमुख पहलुओं की जाँच करके इन अंतरालों को दूर करना है। पहला, यह अध्ययन करना कि क्या नगरीकरण को गति देने में आर्थिक कारक सामाजिक कारकों की तुलना में अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। दूसरा, यह देखना कि शहर की भौतिक संरचना में परिवर्तन नगरीय विकास को कैसे प्रभावित करते हैं। इसमें स्थानिक फैलाव और भूमि उपयोग के पैटर्न, साथ ही निवासियों द्वारा इन परिवर्तनों की धारणा शामिल है। तीसरा, यह मूल्यांकन करना कि नगरीय फैलाव शहर में जीवन की गुणवत्ता को कैसे प्रभावित करता है। यह बुनियादी ढाँचे, सेवाओं, सुरक्षा, आय के अवसरों और प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच जैसे संकेतकों पर विचार करता है।

कुल मिलाकर, यह अध्ययन सीकर शहर में नगरीकरण, नगरीय संरचना और जीवन की गुणवत्ता के बीच जटिल अंतःक्रिया का पता लगाने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करना है जो बेहतर नगरीय नियोजन और नीतिगत निर्णयों का समर्थन कर सके। सीकर जैसे छोटे शहर पर ध्यान केंद्रित करके, यह शोध भारत में प्रमुख महानगरों से परे नगरीय फैलाव की व्यापक समझ में भी योगदान देता है।

अध्ययन क्षेत्र एवं अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन सीकर शहर पर केंद्रित है जो कि राजस्थान के पूर्वी भाग में 27.32 डिग्री उत्तर 75.16 डिग्री पूर्व पर अवस्थित है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग 52 पर आगरा और चुरू के मध्य स्थित है। यह समुद्र तल से औसतन 437 मीटर (1401 फीट) की ऊँचाई पर स्थित है, जो इसे एक अर्ध-शुष्क क्षेत्र में रखता है, जिसका अधिकांश भाग समतल, रेतीला है। सीकर शहर अरावली पर्वत श्रृंखला की तलहटी के पास रेतीले मैदानों पर स्थित है, जो इसकी प्राकृतिक सुंदरता और भौगोलिक महत्व को बढ़ाता है। अरावली की पहाड़ियाँ न केवल इस क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी के स्वरूप को प्रभावित करती हैं, बल्कि ऐतिहासिक रूप से प्राकृतिक सीमाओं का भी काम करती रही हैं। यह स्थान सीकर शहर को एक विशिष्ट भौगोलिक पहचान प्रदान करता है और इसने समय के साथ शहर के बसावट, कृषि और विकास को प्रभावित किया है (Sangwan et al., 2024)।

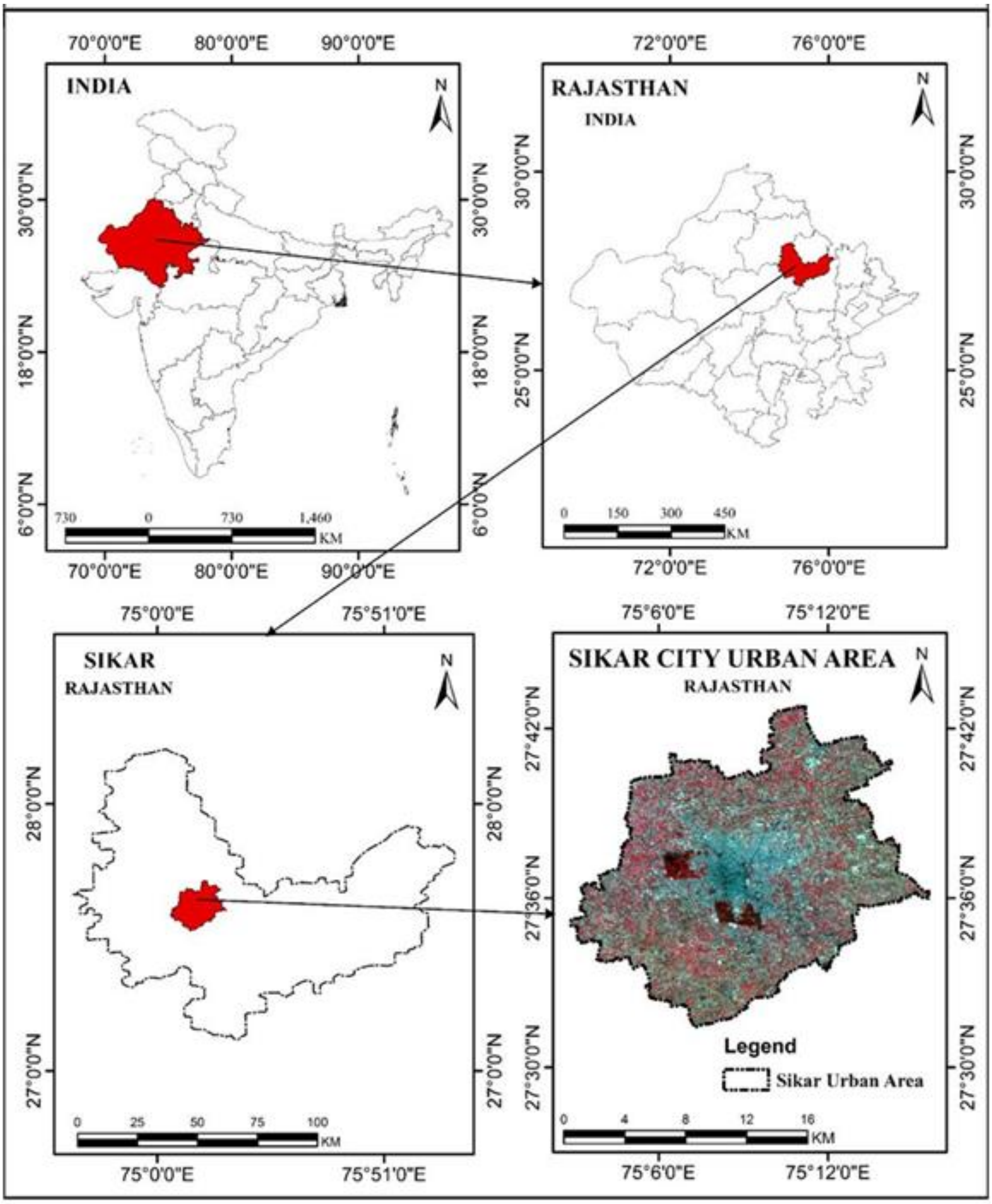

चित्र 1 – अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र

यह शोध सीकर शहर में नगरीकरण की व्यापक समझ प्रदान करने के लिए मात्रात्मक और सामाजिक विश्लेषण, दोनों को शामिल करते हुए एक अनुभवजन्य दृष्टिकोण अपनाता है। अध्ययन जनसंख्या में सीकर शहर के विभिन्न वार्डों के निवासी शामिल हैं। नगरीकरण के कारकों की जाँच करने और नगरीय जीवन की गुणवत्ता और बुनियादी शहरी सुविधाओं की उपलब्धता का आकलन करने के लिए प्रत्येक वार्ड से 5 घरों का चयन करने हेतु एक व्यवस्थित यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक लागू की गई। कुल नमूना आकार 250 घरों का था। आँकड़ों के प्राथमिक और द्वितीयक, दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आँकड़े संरचित सर्वेक्षण प्रश्नावली के व्यक्तिगत प्रशासन के माध्यम से एकत्र किए गए थे। आँकड़ों का विश्लेषण SPSS सॉफ़्टवेयर का उपयोग करके किया गया, जिसमें टी-

परीक्षण और काई-स्क्वायर परीक्षण जैसे सांख्यिकीय उपकरण लागू किए गए। सभी प्रतिभागियों की सूचित सहमति और गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए पूरे अध्ययन में नैतिक विचारों का पालन किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण व परिणाम

सीकर शहर के 250 निवासियों से एक संरचित, स्व-निर्मित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित प्राथमिक आँकड़ों का जनसांख्यिकीय विश्लेषण निम्नलिखित तालिका में संक्षेपित किया गया है। इसमें आयु, लिंग, सामाजिक स्थिति, शैक्षिक योग्यता, और व्यवसाय जैसी जनसांख्यिकीय जानकारियाँ शामिल है।

तालिका 1 – जनसांख्यिकीय विश्लेषण

जनसांख्यिकीय जानकारियाँ (N = 250)		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
आयु समूह	18 से 30 वर्ष	44	17.6%
	31 से 45 वर्ष	71	28.4%
	46 से 60 वर्ष	98	39.2%
	60 वर्ष से अधिक	37	14.8%
लिंग	पुरुष	166	66.4%
	महिला	84	33.6%
सामाजिक स्थिति	सामान्य वर्ग	181	72.4%
	अनुसूचित जाति	47	18.8%
	अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग	22	8.8%
शैक्षिक योग्यता	प्राथमिक/माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक स्तर	69	27.6%
	डिप्लोमा/स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर	153	61.2%
	प्रोफेशनल डिग्री/डॉक्टरेट स्तर	28	11.2%
व्यवसाय	छात्र	31	12.4%
	किसान	82	32.8%
	सरकारी कर्मचारी	24	9.6%
	निजी क्षेत्र कर्मचारी	43	17.2%
	स्वरोजगार (व्यापार व पेशा)	58	23.2%
	अन्य	12	4.8%

यह अध्ययन सीकर शहर के नगरीकरण में प्रमुख चरों के रूप में सामाजिक कारकों (चिकित्सा और शिक्षा सुविधाएँ, बिजली और पानी की आपूर्ति, अपशिष्ट प्रबंधन और स्वच्छता सुविधाएँ, मनोरंजन सुविधाएँ और आमोद-प्रमोद के स्थान, शहरी नियोजन परियोजनाएँ, पुनर्वास व किफायती आवास योजनाएँ, आदि) और आर्थिक कारकों (औद्योगिक और वाणिज्यिक गतिविधियाँ, रोजगार के अवसर, रहने की कम लागत, सार्वजनिक परिवहन और बुनियादी ढांचे, पर्यावरण व मौजूदा प्राकृतिक संसाधन, आदि) के प्रभाव की तुलना पर केंद्रित है। इस उद्देश्य हेतु, यह एक शून्य परिकल्पना (H_{01}) प्रस्तुत करता है कि सीकर शहर के नगरीकरण पर सामाजिक कारकों की तुलना में आर्थिक कारकों का अधिक प्रभाव है। इस परिकल्पना का आकलन करने के लिए एक युग्मित नमूना टी-परीक्षण लागू किया गया, जिसके परिणाम निम्न तालिका में प्रस्तुत किये गए हैं –

तालिका 2 – H_{01} का अनुमानात्मक विश्लेषण (युग्मित नमूना टी-परीक्षण)

Pair	Mean	SD	SE Mean	95% CI		t-score	p-value
				Lower	Upper		
आर्थिक → सामाजिक	1.86	0.83	0.05	1.76	1.96	35.58	.000

सांख्यिकीय विश्लेषण आर्थिक और सामाजिक कारकों के बीच 1.86 का महत्वपूर्ण माध्य अंतर दर्शाता है। इसमें 95% विश्वास अंतराल 1.76 से 1.96, 35.58 का टी-स्कोर और .000 का पी-मान है। यह एक मजबूत सांख्यिकीय महत्त्व दर्शाता है। प्राप्त परिणाम इस परिकल्पना का समर्थन करता है कि सीकर शहर के नगरीकरण पर सामाजिक कारकों की तुलना में आर्थिक कारकों का अधिक प्रभाव पड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि निवासी सामाजिक सुविधाओं की तुलना में रोज़गार, उद्योग और बुनियादी ढाँचे जैसे पहलुओं को प्राथमिकता देते हैं। इससे पता चलता है कि नगरीय नियोजन में आर्थिक विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

यह अध्ययन नागरिकों के दृष्टिकोण के आधार पर यह आकलन भी करता है कि नगरीय आकारिकी के स्थानिक-कालिक स्वरूप में परिवर्तन सीकर शहर के नगरीकरण को कैसे प्रभावित करते हैं। शून्य परिकल्पना (H_{02}) यह बताती है कि नगरीय आकारिकी के स्थानिक-कालिक स्वरूप में परिवर्तन सीकर शहर के नगरीकरण को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। प्रमुख चरों में स्थानिक विस्तार, वास्तुशिल्प पहचान, नगर नियोजन और सड़क संरचना जैसे भौतिक पहलू; आवास, वाणिज्य, औद्योगिक विकास और बुनियादी ढाँचे जैसे कार्यात्मक पहलू; और जनसंख्या वृद्धि, सामाजिक-आर्थिक असमानताएं, साक्षरता, प्रवास और जनसंख्या घनत्व जैसे जनसांख्यिकीय पहलू शामिल हैं। इस परिकल्पना का आकलन करने के लिए, युग्मित प्रतिदर्श टी-परीक्षण और काई-स्क्वायर परीक्षण लागू किए गए। सांख्यिकीय परिणाम निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत हैं –

तालिका 3 – H_{02} का अनुमानात्मक विश्लेषण (युग्मित नमूना टी-परीक्षण व काई-स्क्वायर परीक्षण)

	Unstandardized Coeff.		Standardized Coeff.	t score	χ^2	p value
	β	SE				
(Constant)	-2.56	2.18	0.00	-3.97	-	.000
भौतिक आकारिकी के तत्व	1.00	4.03	0.48	4.16	140.31	.000
कार्यात्मक आकारिकी के तत्व	1.00	5.78	0.42	2.89	166.92	.000
जनसांख्यिकीय आकारिकी के तत्व	1.00	2.92	0.39	4.67	121.27	.000

सांख्यिकीय परिणाम दर्शाते हैं कि नगरीय आकारिकी के तीनों तत्व—भौतिक, कार्यात्मक और जनसांख्यिकीय—सीकर शहर के नगरीकरण पर सार्थक प्रभाव डालते हैं। इन तत्वों के टी-स्कोर भी उच्च (2 से ऊपर) हैं। यह नगरीकरण पर इन तत्वों के मजबूत प्रभाव की ओर इंगित करता है। मानकीकृत गुणांक दर्शाते हैं कि भौतिक आकारिकी का सबसे मजबूत प्रभाव (0.48) है, उसके बाद कार्यात्मक (0.42) और जनसांख्यिकीय (0.39) तत्व आते हैं। काई-स्क्वायर मान भी बड़े हैं, जो इन संबंधों की मजबूती को पुष्ट करते हैं। ये परिणाम शून्य परिकल्पना (H_{02}) को खारिज करते हैं। यह पुष्टि करता है कि नगरीय आकारिकी के स्थानिक-कालिक पैटर्न में परिवर्तन सीकर शहर में नगरीकरण को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। इसका तात्पर्य है कि शहरी योजनाकारों को नगरीय विकास का प्रबंधन या पूर्वानुमान करते समय इन तीन प्रकार के रूपात्मक परिवर्तनों पर विचार करना चाहिए।

यह अध्ययन बुनियादी ढाँचे, सार्वजनिक सेवाओं, सुरक्षा, मनोरंजन, आय के अवसरों और प्राकृतिक संसाधनों जैसे प्रमुख संकेतकों की जाँच करके सीकर शहर के निवासियों के जीवन की गुणवत्ता का आकलन करता है। शून्य परिकल्पना (H_{03}) बताती है कि इन कारकों के आधार पर मापे जाने पर सीकर शहर में जीवन की गुणवत्ता काफी

संतोषजनक पाई जाएगी। इस परिकल्पना का आकलन करने के लिए एक युग्मित नमूना टी-परीक्षण लागू किया गया, जिसके परिणाम निम्न तालिका में प्रस्तुत किये गए हैं –

तालिका 4 – H_{03} का अनुमानात्मक विश्लेषण (युग्मित नमूना टी-परीक्षण)

Variable	Mean	SD	SE Mean	Mean Diff.	95% CI		t-score	p-value
					Lower	Upper		
जीवन की गुणवत्ता	3.48	0.39	0.02	3.43	3.38	3.48	140.22	.000

सीकर शहर के निवासियों के जीवन की गुणवत्ता का औसत स्कोर 3.48 था, जिसमें नकारात्मक त्रुटि थी (SE = 0.02), और परिणाम सांख्यिकीय रूप से सार्थक थे (टी=140.22, पी=.000)। इससे पता चलता है कि निवासी आम तौर पर अपने जीवन की गुणवत्ता को संतोषजनक मानते हैं, और बुनियादी ढाँचे और सार्वजनिक सेवाओं जैसे प्रमुख क्षेत्रों में उनकी राय एक जैसी है।

निष्कर्ष-आधारित सुझाव

सीकर शहर का नगरीय विस्तार चुनौतियाँ और अवसर दोनों लेकर आया है। जहाँ आर्थिक प्रगति और बेहतर बुनियादी ढाँचे ने शहर को बेहतर बनाया है, वहीं तेज़ और अनियोजित विकास ने सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याएँ भी पैदा की हैं (Bagriya & Saini, 2024, Patra et al., 2025)। यह अध्ययन इन चुनौतियों से निपटने और अवसरों का लाभ उठाने के लिए एक स्पष्ट और संतुलित नियोजन दृष्टिकोण का सुझाव देता है। प्रस्तुत सुझाव नीति निर्माताओं और योजनाकारों को भविष्य में सीकर शहर के सतत और संगठित विकास को सुनिश्चित करने में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

1. नगरीय विकास रणनीतियों को रोज़गार सृजन, औद्योगिक विकास और बुनियादी ढाँचे के विस्तार पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह निवासियों की प्राथमिकताओं के अनुरूप है और संतुलित नगरीकरण को बढ़ावा देगा।
2. नगर नियोजकों को नगरीय आकारिकी के भौतिक, कार्यात्मक और जनसांख्यिकीय पहलुओं को विकास ढाँचों में एकीकृत करना चाहिए। इन तत्वों का नगरीय विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है और इन्हें ज़ोनिंग, भूमि उपयोग और बुनियादी ढाँचे से संबंधित निर्णयों का मार्गदर्शन करना चाहिए।
3. नगरीय आकारिकी और जनसंख्या प्रवृत्तियों का नियमित स्थानिक और सांख्यिकीय विश्लेषण लागू किया जाना चाहिए। इससे नगरीय फैलाव का पूर्वानुमान लगाने और उसके अनुसार बुनियादी ढाँचे की योजना बनाने में मदद मिलेगी।
4. हालाँकि आर्थिक कारक प्रमुख चालक हैं, लेकिन शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और मनोरंजन जैसी सामाजिक सुविधाओं की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। संतुलित विकास नगरीय विस्तार की दीर्घकालिक स्थिरता को बढ़ाएगा।
5. सीकर शहर के निवासी अपने जीवन स्तर से संतुष्ट हैं। उनकी प्रतिक्रिया का उपयोग सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढाँचे में सुधार के लिए किया जाना चाहिए। सहभागी नियोजन यह सुनिश्चित कर सकता है कि भविष्य की शहरी नीतियां सामुदायिक आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करें।

समापन टिप्पणी व भावी दृष्टिकोण

संक्षेप में, यह अध्ययन इस निष्कर्ष की ओर इंगित करता है कि सीकर शहर में नगरीकरण आर्थिक कारकों से प्रेरित है और नगरीय आकारिकी में बदलावों से प्रभावित है। निवासियों ने जीवन की गुणवत्ता को आम तौर पर संतोषजनक माना है, खासकर बुनियादी ढाँचे और सार्वजनिक सेवाओं के संदर्भ में। ये निष्कर्ष संतुलित नगरीय विकास की

आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं जो आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण दोनों को बढ़ावा दे। भविष्य में, सीकर शहर सक्रिय नियोजन से लाभान्वित हो सकता है जिसमें शहरी रुझानों का नियमित विश्लेषण शामिल है। इससे नगरीय फैलाव को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और सतत नगरीय विकास को दिशा देने में मदद मिलेगी।
यह अध्ययन आर्थिक कारकों और नगरीय आकारिकी को एक छोटे भारतीय शहर में नगरीकरण के पैटर्न से जोड़कर एक सैद्धांतिक योगदान देता है। व्यावहारिक रूप से, यह ऐसे साक्ष्य प्रदान करता है जो नीति-निर्माण, ज़ोनिंग और बुनियादी ढाँचे की योजना बनाने में मार्गदर्शन कर सकते हैं। सामाजिक रूप से, यह शोध सार्वजनिक सेवाओं और विकास लक्ष्यों को आकार देने में निवासियों की प्रतिक्रिया के महत्व पर प्रकाश डालता है। अध्ययन का विशिष्ट योगदान इसके बहुआयामी दृष्टिकोण में निहित है, जो आर्थिक, आकारिकी और जीवन की गुणवत्ता के कारकों को जोड़ता है। यह तीव्र लेकिन असमान नगरीय विकास का अनुभव कर रहे समान शहरों के लिए एक मॉडल प्रस्तुत करता है।
यह अध्ययन सीकर शहर तक सीमित है और अन्य क्षेत्रों के नगरीकरण पैटर्न को प्रतिबिंबित नहीं कर सकता है। यह सांख्यिकीय विधियों पर भी निर्भर करता है जो सभी सामाजिक और पर्यावरणीय कारकों को शामिल नहीं कर सकते हैं। भविष्य के शोध तुलनात्मक विश्लेषण के लिए इस अध्ययन का विस्तार कर सकते हैं और इसमें और शहरों को शामिल कर सकते हैं। भावी अध्ययनों में नगरीय फैलाव पर पर्यावरणीय स्थिरता और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का पता लगाया जाना चाहिए। निवासियों से प्राप्त गुणात्मक डेटा सामाजिक गतिशीलता और शहरी अनुभवों के बारे में गहरी अंतर्दृष्टि भी प्रदान कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. Bagriya R and Saini V. “Socioeconomic and Environmental Effects of Urbanization within the Framework of Sustainable Development Goals: A Case Study of Sikar City in Rajasthan, India”. Rajasthali Journal, Vol.3, Iss.3, 2024, pp.73-78.
2. Chakraborty B and Dey P. “Assessing the role of urban reform policy in fostering healthy cities: a discourse on Jawaharlal Nehru National Urban Renewal Mission of India”. Discover Public Health, Vol.22, Iss.1, 2024, ID 100.
3. Das S, Choudhury MR, Chatterjee B, et al. “Unraveling the urban climate crisis: Exploring the nexus of urbanization, climate change, and their impacts on the environment and human well-being - A global perspective”. AIMS Public Health, Vol.11, Iss.3, 2024, pp.963-1001.
4. Mishra AP, Anand S, and Batar AK. “Optimizing regional development through smart cities: A case study of Lucknow city, India”. Regional Science Policy & Practice, Vol.2025, 2025, ID 100226.
5. Patra PK, Behera D, Chettry V. “Geospatial analysis of unplanned urbanization: impact on land surface temperature and habitat suitability in Cuttack, India”. Discover Sustainability, Vol.6, 2025, ID 118.
6. Sangwan A, Anand V, Kumar N, et al. “Development of site suitability framework for urban greenspace: a case study of Sikar city, Rajasthan, India”. Environmental Earth Sciences, Vol.83, Iss.22, 2024, ID 634.
7. Singh V and Barodawala T. “Rural-Urban Communities: In the Context of Developed India 2047”. International Journal for Multidisciplinary Research, Vol.7, Iss.3, 2025, ID R250243671.